

रिषि तस्या उत द्विषः 2,7,2. 5,23,1. 8,56,11. यं ब्रह्मतेव पिप्रति 1,41, 2. पारचर पीपृहि मूढमद्य Bāg. P.7,9,41. अपारित्स गृहीतिल्को कृत-शेषान्त्वंगमान् Bāg. P.15,100. erhalten: मनस्तनूषु पिप्रतः (VS. und Kāuc. बिधतः) LĀTJ. 3,2,10. तं पिपृहि दशमास्यो ऽत्तरुदे स ज्ञायताम् CĀṆK. GRH. 1,19. — 3) vorwärts bringen, fördern, unterstützen: इदे राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय AV.7,35,1. तेना नो यज्ञं पिपृहि AV.7,20,4. स्तुतिं पिपृत्सर्तुं नि तारित् RV.4,152,3. 4,56,7. — 4) Jmd (acc.) übertreffen, überbieten: कर्यो ये ते अन्विधं श्रेष्ठो वातस्य पिप्रति VĀLAKH.2,8. स अच्यर्षिं तपसा पिपति AV.4,1,5,1,2.

— caus. पारयति (ep. auch med.), अपीपरत्, ०रन्, पीपरत् und पीपै-रत् RV.3,32,14. 1) übersetzen, hinüberführen, hindurchgeleiten: नविवं नः पारयतम् RV.2,39,4. 15,5. 1,140,12. 4,30,17. 9,73,1. या नः पीपरत्तमस्तिरः 1,46,6. KĀṬH. 33,6. — 2) hinausführen, retten; beschützen; bes. am Leben erhalten Nīa.9,13. इया इयं समने पारयन्ती RV.6,75,3. यस्मै कृपोति ब्राह्मणस्तं राजन्यार्यामसि 10,97,22. तमंकेतः पीपरः 4,2,8. 3,32,14. स तोकर्मस्य पीपरच्छर्माभिः 5,77,4. पारयामि त्वा रजस उत त्वा मृत्योरपीपरम् AV.8,2,9. यद्येवं पारयामसि पुरुषं डुरिता-दधि 7,7. 4,17,2. 5,28,2. ÇAT. Br. 1,8,1,2. fgg. 7,2,3,28. 11,8,3,3. न वै प्राण ऋते ऽन्नात्पारयति नाम्नते प्राणात् PĀṆĀV.Br.16,8,9. — 3) über Etwas hinwegkommen, Etwas zu Ende bringen, überwinden Dhātup. 33,57 (कर्मसमाप्ति). उष्ट्रे न पीपरो मर्धः RV.4,138,2. पारयिष्याम्यहे व्रतम् (तपः SĀV.4,6) MBh.3,16719.2,2474.7,2790. R.2,53,19,23. पारयते MBh.3,10279. 16720. व्रतं पारितम् 16729. अपारयत्या दुःखानि 4,659. कृच्छ्रमिदम् — पारितम् 5,208. पारयतु प्रतिज्ञाम् 7,2787. शीर्षपत्त्रेण चैकेन पारयामास सापरम् (so ist zu lesen) । संवत्सरं तीव्रकोपा पादाङ्गुष्ठाग्रधिष्ठिता ॥ 5,7349. अनभ्रत्या पचत्या च समा द्वाश पारिताः 9,2809. हृत्तिकागमनकालमपारयती nicht erwarten könnend Vrt. in LA. 23,9. — 4) Stand halten, Widerstand leisten (mit dem acc.): पराक्रमं ततस्तस्य पराक्रम्य पराक्रमी । तस्मा पारयामास मत्तो मत्तमिव द्वियम् ॥ MBh. 6,1913. गन्धर्ववेगमपारयती 9,1074. व्यायामं मुष्टिभिः कृत्वा तलैरपि समागतैः (समाकृतैः Aś. 3,40) । अपारयंश्च तद्दत्तं निश्चेष्टमगमं महीम् ॥ 3,11974. ते तदा पारयतश्च ऋमिन्तश्च मनस्विनः । स्वधर्ममनुपश्यन्ते न ब्रह्मः स्वामनीकिनीम् ॥ 7,8378. पापकारिणो ऽविशङ्कता एव यावन्न पारयन्ते (med.) तावच्छासयेत् KULL. zu M. 9,308. यं ब्राह्मणास्तु श्रुद्रायो वामाडत्पादयेत्सुतम् । पारयन्नेव (= जीवन्नेव KULL.) शवस्तस्मात्पारशवः स्मृतः ॥ M. 9,178. — 5) im Stande sein, vermögen; mit dem inf. P. 3,4,66, Sch. तद्यथा शारदं वर्षं गोवृषः शीघ्रमागतम् । अपारयन्वारयितुं प्रतिगृह्णाति मौलितः ॥ HARIV. 13826. नानेन सह वाढुम् हे वयं पारयामः Bāg. P. 5,10,4. 8,6,34. DAÇAK. 97,15. KĪH. 8,19. SĀH. D. 38,19. pass.: तद्वक्तुं न पार्यते dieses zu sagen ist nicht möglich ÇATR. 1,346. RĀGA-TAR. 3,309. 5,316; vgl. शक्. Statt des inf. der loc. des nom. act.: अपारयन्नात्मविमोक्षणे Bāg. P.8,2,30.

— अति 1) hinüberführen, hindurchgeleiten, übersetzen über: स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षा स्वस्त्वयं RV.4,97,8. 99,1. पिपृत्तुं नो अति द्वेषामि 2,27,7. 3,13,3. 20,4. 4,39,1. यत्समुद्राति पर्षथः (Padap. zieht die praep. nicht zum verbum) 5,73,8. 8,18,7. ये नो अन्वेष्टे ऽतिपिप्रति 7,66,5. 10,33,14. 96,8. — 2) übersetzen (intrans.): यत्समुद्रमतिं शूर परिषि RV.4,174,9. — 3) hinüberkommen über so v. a. erfüllen: यः स्वो प्रतिज्ञो नातिपिपति Bāg. P. 3,18,12. — caus. hinüberführen, hin-

durchgeleiten, übersetzen über: द्विषो नः — अति नावेवं पारय RV.4,97, 7. 189,2. 2,34,15. अर्कमत्यपीपरो रात्रिं सूचति पारय AV.47,1,25. 19,50,2. इन्द्रे रात्रिस्तमसा मृत्योर्विद्यतमत्यपारयन् Ait. Ba. 4,5. तान्मृत्योरतिपारये erratten, befreien von Bāg. P. 3,25,40.

— अप wegschaffen (?): विश्वानि पूरोरप पर्षि वङ्किः RV.4,129,5.

— उद् caus. hinausführen (an's Ufer): (तौप्रयं नावः) उद्दिश्यामिषिताः पारयति RV.4,182,6. retten: उक्त्वा मृत्योरिषधयः सोमराज्ञीरपीपरन् AV.8,1,17. 19. 2,9. — Vgl. उत्पारण.

— समुद् caus. 1) ausbreiten, zurückschlagen: सोमोपनरुनस्य समुत्पार्यात्तान् ÇAT. Ba. 3,3,3,18. — 2) hervorstrecken: स एतं प्राञ्चं प्रावाणामात्मन एव समुत्पारयत् ÇAT. Ba. 14,9,4,2.

— निस् herauschaffen, heraushelfen: विश्वस्मान्नो अन्केसो निषिर्षपत्न RV.4,108,1. 115,6. निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः 7,68,7. भुज्यमंकेसः पिपृथो निः 10,65,12. Die Imperativ-Form निष्पर VS. 6,36 etwa in der Bed. komm heraus; TS. (in der gedr. Ausg. und in unserer Handschr.) liest dafür निष्पर. — caus. herauschaffen, heraushelfen: निष्पारयं पारयथः समुद्रात् RV.4,118,6.

— प्र caus. hinüberschaffen: प्र यत्समुद्रमतिं शूर परिषि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति RV.4,174,9.

— सम् caus. zum Ende —, zum Ziele führen: स एतं सं पारयति TS. 3,1,1,4. ÇAT. Br. 12,3,4,3. PĀṆĀV. Ba. 4,5,12. श्येनो वा एतदकः संपारयितुमर्हति 13,10,14. KĀṬJ. ÇR. 13,1,11.

3. पर (प), प्रियते व्यायामे Dhātup. 28,109.

— आ, partic. आपृत beschäftigt: (गोकुलम्) अङ्गापृतं निशि शयानमतिश्रमेण (Burnouf: le jour enveloppés par le fils de Maya; nach unserer Meinung ist मयसु नुना mit पिहितान् zu verbinden) Bāg. P. 2,7,31. अङ्गापृतार्तकरणा निशि निःशयानाः (Burnouf: fatigués et tourmentés pendant le jours dans leurs organes) 3,9,10; vgl. आप्र. Die Form आपृपोति haben wir in der folgenden Stelle: नूनं प्रमतः कुरुते विकर्म यदिन्द्रियप्रीत्य आपृपोति sich beschäftigen mit, nachgehen Bāg. P. 5,5,4. Burnouf: lorsqu'il trouve du plaisir aux jouissances des sens; vgl. पर (प), पृपोति प्रीती Dhātup. 27,12.

— व्या (व्याप्रियते) mit Etwas (loc., अर्थम्, हेतोस्) beschäftigt sein: कुलालादिषु व्याप्रियमाणेषु घटार्थम् ÇAṆK. zu BRH. ĀR. Up. S. 38. व्यापृत beschäftigt mit, bei (vorübergehend und zufällig oder von Amtswegen), = कर्मसचिव H. 719. — Bāg. P. 3,12,50. मा व्यापृतः परकार्येषु भूस्वम् kümmere dich nicht um fremde Angelegenheiten MBh. 2,2126. गोषु 4,597. वित्तसंचये R. 2,39,14. तत्र 23,30. इदमन्यस्मिन्कर्मणि व्यापृतं धनुः ÇĀK. 159. MĀLAV. 10,4. 39. कुरुम्ब^० H. 478. शिलीपदव्यापृतदत्तिगाङ्गि Dhātup. 94,10. वैवस्वतो व्यापृतः सचेहेतोः MBh. 1,7281. Vgl. व्यापार, ०पृति. — caus. Jmd beschäftigen an, bei, mit (loc., selten instr.; auch mit अर्थम्, Jmd mit Etwas beauftragen): परिजनं व्यापारयत्यात्तिके Spr. 324. एकं व्यापारयामास करं किरिटे Ragh. 6,19. स दत्तिषो तूणाम्बेन — व्यापारयन्कस्तम् 7,54. Z. d. d. m. G. 6,93,17. उमामुखे — व्यापारयामास विलोचनानि Kumāras. 3,67. Ragh. 13,25. RĀGA-TAR. 1. 211. ÇATR. 1,161. SĀH. D. 33,9. यदस्यामाकृतौ शस्त्रं व्यापारयितुमिच्छामि Vid. 103. वनद्विषानां त्रासार्थम् — व्यापारितः प्रूलभृता Ragh. 2,38. आपृक्त = व्यापारित P. 2,3,40, Sch. Vgl. व्यापारण.